੧ ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

राष्ट्रीय सिख संगत

अखिल भारतीय अभ्यास वर्ग

नानक शाही संवत् ५३२ भादरों २२-२५

अश्विन कृष्णा ३ से ६, संवत् २०५८

तदानुसार 6 से 9 सितम्बर सन् 2001

+ + + + + + + + + + + + + +

राष्ट्रीय सिख संगत

रहित मर्यादा

राष्ट्रीय सिख संगत का संक्षिप्त परिचय

1. प्रस्तावना – गत वर्षों में पंजाब व देश के विभिन्न भागों में, नवम्बर 1984 में दिल्ली तथा अन्य भागों में घटित दुर्भाग्य पूर्ण घटनाओं के कारण, सांझी विरासत, परम्परागत एकता व राष्ट्र के परिपेक्ष्य में चिन्ता करने वाले भद्रजनों के मन में एक पीड़ा उभरी कि सिख बन्धुओं एवं शेष बृहत्तर हिन्दू समाज के बीच कुछ अलगाववाद तथा मानसिक संवादहीनता पनप रही है। दूसरी तरफ सिखों का भविष्य, उनकी सामूहिक पहचान (Sikhidetity) सिखों का भारत की धरती व सभ्याचार से जुड़ा परम्परागत रिश्ता आदि को लेकर सिक्खों के मन में मंथन चल रहा है। सिख समाज आज संकट ग्रस्त है। जहां उसका कारण उक्त वर्णित बाह्य घटनाक्रम व व्यवहार है वहीं मन में दो परम्पराओं को लेकर चल रहा संघर्ष है। एक परम्परा वह है जिसका सूत्रपात गुरुनानक देवजी ने किया और जो गुरु गोविन्द सिंह जी में पराकाष्ठा को प्राप्त हुई। दूसरी परम्परा में कालिफ परम्परा। ऐसे में गुरु वाणी में दर्शायें गये जीवन दर्शन, आध्यात्मिक सांस्कृतिक आधार पर चल कर ही सही मार्ग दिख सकता है।

2. सिखों का परम्परागत चरित्र – "गुरु गोविन्द सिंह साहब के अनुसार" "धन जीयो तन को जग में मुख ते हरि, चित्त में युद्ध विचारै!" कर्मकाण्ड–आडम्बर मुक्त, पुरषार्थी, आत्मसम्मानी, दयालू, ज्ञानी व संघर्ष शील, यह मौलिक गुण सिखों के है। अहमद शाह दुर्रानी के सतरवें हमलें के साथ आये काजी नूरमुहम्मद ने लिखा कि सिख युद्ध कौशल व कला में निपुण तथा बहादुर तो हैं ही साथ ही कुछ चारित्रक गुणों के कारण अन्य जंगजू कौमों से बहुत आगे है। उसके अनुसार कोई सिख कायर, भगोड़े, कमजोर, बालक व स्त्री पर वार नहीं करता। किसी की इज्जत या धन पर बुरी नजर नहीं रखता, चोरों व गलत लोगों की संगति से परहेज करता है। सिख मैदाने–जंग में वीरता से 'शेर' की तरह तथा शान्ति समय दरियादिली में हातिम ताई को भी मात करते है। जीवन मरण के संघर्ष में लगी जत्थे बन्दी उस विपरीत वेला में भी जीवन मूल्यों व सभ्याचार नियमों का दृढता से पालन करें यह उच्च जीवन आदर्श व नैतिक चरित्र का प्रमाण है। राष्ट्रीय चरित्र की यह पुनर संजीवनी गुरु गोविन्द सिंह जी की देन है।

3. वर्तमान चुनौती – आज वे जीवन मूल्य हम में विद्यमान हैं या नहीं ? यदि नहीं तो उन्हें विकसित करें तथा शेष बृहत्तर हिन्दु समाज में उस उच्च जीवन रचित्र का अहसास करायें। अपनी सांझी वालता, बकार व विरासत को अक्षुण रखे – गुरुवाणी में दर्शायें जीवन मूल्यों के आधार पर हमारी जीवन रचना हो ऐसा प्रयास ही समस्या का हल हो सकता है।

इस उद्देश्य को अर्पित राष्ट्रीय सिख संगत अपनी यात्रा के 15 वर्ष शीघ्र ही पूर्ण करने जा रही है। संगत का छोटा सा पौधा तूफानों और झंझावतों के आघात सहकर भी अपनी किशोर अवस्था को प्राप्त कर गया है। आज देश के 18 राज्यों में प्रदेश समितियां है। उनके 600 स्थानीय समितियां और 10 हजार सदस्य है। संगत का संगठन विश्व व्यापी बनने को अग्रसर है। आज इंगलैण्ड, हालैण्ड, जर्मन, अमेरिका, केन्या, कनाड़ा में अपनी शाखायें है। अमेरिका में सिख संगत ऑफ अमेरिका के नाम से प्रभावी संगठन सक्रिय है जहां प्रभावी नियमित कार्यक्रम होते है।

अभी तक सिख संगत के 5 राष्ट्रीय अधिवेशन हो सम्पन्न चुके हैं। पहला अधिवेशन मार्च 1987, नागपुर में हुआ। इसमें संगत के संविधान का मसौदा तैयार हुआ। दूसरा 1988 दिसम्बर में नांदेड (महाराष्ट्र) में श्री हजूर साहब में आयोजित हुआ। 'संगठन विस्तार' इसका मुख्य विन्दु था। तीसरा अधिवेशन दिसम्बर

1990 में पटना साहिब (बिहार) में सम्पन्न हुआ। जिसमें विदेशों में कार्य प्रारम्भ करने का निश्चय हुआ। संस्थापक अध्यक्ष स्व. सरदार शमशेर सिंह जी ने लगातार तीन बार अमेरिका, यूरोप, अफ्रीका का प्रवास किया। चौथा अधिवेशन अप्रैल 1992 में दिल्ली में हुआ। 'हिन्दुस्तान समालेसी बोला' इस संघोष बना। पांचवा अधिवेशन अगस्त 1995 में जयपुर में हुआ जिसमें ग्रामीण अंचलों में सगत के कार्य को ले जाने का निश्चय हुआ। छठा अधिवेशन 11–13 सितम्बर 98 को दिल्ली में सम्पन्न हुआ जिसमें देश की महान् धार्मिक हस्तियों के साथ साथ हजारों की संख्या में कार्यकर्ता सम्मलित हुए।

अखिल भारतीय अभ्यास वर्ग – प्रथम अभ्यास वर्ग भोपाल में, द्वितीय आगरा में, तृतीय ग्वालियर में, चतुर्थ चिन्तन वर्ग दिल्ली, पंचम अभ्यास वर्ग रूद्रपुर षष्टम अभ्यास वर्ग हैदराबाद, सप्तम् अभ्यास वर्ग अमृतसर में सम्पन्न हुये अब यह आठवॉं प्रयास वृन्दावन में है।

4. उद्देश्य व कार्य–

(अ) राष्ट्रीय स्तर पर होने कें कारण तथा राष्ट्रीय विचारधारा का समावेश होने के कारण इसका नाम राष्ट्रीय सिख संगत रखा है। श्री गुरुनानक देव जी, गुरुतेग बहादुर जी तथा गुरु गोविन्द सिंह जी के चरणों की छुअन पूरे भारत को प्राप्त है। आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बंगाल के जयदेव, महाराष्ट्र के नामदेव, राजस्थान के दादू धन्ना, उत्तर प्रदेश के रैदास कबीर, पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) के शेख फरीद सहित पूरे भारत के सन्तों की वाणी संकलित है। सिख पंथ के प्रचार व सिंख समाज को दिशा दर्शन के लिए स्थापित तख्त (वर्तमान में दमदमा साहिब सहित पांच) पटना साहिब पूर्व भारत, हुजूर साहिब नान्देड, दक्षिणी भारत, आनंद पुर साहिब पर्वती क्षेत्र तथा अकाल तख्त अमृतसर उत्तररी भारत में स्थित होना पूरे भारत का ही चिन्तन है। पंच प्यारों के जन्म स्थलों से अखण्ड भारत का ही दिग्दर्शन होता है।

(आ) 'हिन्दुस्तान समालसी बोला' के गुरुवाक अनुसार सिख संगत देश की एकता और अखण्डता में विश्वास रखती है।

(इ) नित्य जीवन के आधार के रूप में गुरु वाणी का प्रचार और प्रसार करना।

(ई) सिख और शेष हिन्दु समाज के बीच विद्यमान परम्परागत आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक बन्धनों को सुदृढ कर भ्रातृत्व की भावना का पोषण करने हेतु वेद, शास्त्र, पुराण, गुरु ग्रन्थ साहिब, दशम ग्रन्थ आदि धार्मिक ग्रन्थों की शिक्षाओं का प्रचार प्रसार करना।

(उ) सर्वे भवन्तु सुखिनः तथा 'सरबत का भला' में अभिव्यक्त भावना को आधार बनाकर जनसेवा व जन कल्याण के कामों को हाथ में लेना।

(ऊ) सदीवी भाईचारा, नैतिक उन्नति, धार्मिक जागरण, दूसरे वर्गो के साथ विश्वास की भावना, सिखों की समस्याओं , राष्ट्रीय धारा आदि विषयों को लेकर गुरु पर्व, गुरुग्रन्थ साहिब में वर्णित सन्तों के जन्मदिन, रामनवमी जन्माष्टमी व अन्य उत्सव मनाना।

(ए) उक्त उद्देश्यों के अनुसार चलने व प्रचार करने के लिए युवाओं के प्रशिक्षण वर्ग आयोजित करना। रागी, जत्थे, प्रचारक, कथावाचक तैयार करना, गोष्ठियां आयोजित करना, पत्र पत्रिका, गजट, आदि प्रकाशित करना, सन्तों व विद्वानों के धार्मिक दौरे आयोजित करना आदि।

(ऐ) समाज में संस्कारों को सुदृढ करने तथा भावी पीढी की देश भक्ति, समाजसेवी भावना, आध्यात्मिक मनोवृत्ति को सुदृढ करने के लिए प्रशिक्षण वर्ग लगाना तथा इस निमित्त महिलायें में संगठन खड़ा करना।

राग मालीगउड़ा बाणी भगत नामदेव जी की

१ ओं सतिगुर प्रसादि ।। धनि धंनि ओ राम बेनु बाजै। मधुर मधुर धुनि अनहत गाजै।। १ ।। रहाउ।। धनि धनि मेघा रोमावली। धनि धनि क्रिसन ओढ़े कांबली ।। १ ।। धनि धनि तू माता देवकी। जिह ग्रिह रमईआ कवलापती।।२।। धनि धनि बनखंड बिंद्राबना। जह खेलै स्री नाराइना।। ३।। बेनु बजावै गोधनु चैर । नामे का सुआमी आनद करै ।।४।। १।।

सूरमताई के तत्व

।। बाणी श्री गुरुनानक देव जी।।

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ। सिरु धरि तली गली मेरी आउ।।
इतु मारगि पैरु धरीजै। सिरु दीजै काणि न कीजै।।।।

।।वाणी श्री गुरु अर्जुन देव जी की।।

पहिला मरण कबूलि करि जीवण की छडि आस। होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पास।।
जिसु मनि वसै पारब्रहमु निकटि न आवै पीर। भुख तिख तिसु न विआपई जमु नहीं आवै नीर।।
जाको प्रेम सुआउ है चरन चितव मन माहि। नानक बिरही ब्रह्म के आन न कतहू जाहि।।
मगनु भइओ प्रिअ प्रेम सिउ सूध न सिमरत अंग। प्रगटि भइओ महि नानक अधमपतंग।।

रसावल छन्द (श्री दशम ग्रंन्थ साहिब)

धनं जीओ तिह को जग मैं, मुख तै हरि चित मैं जुद्ध विचारै। देह अनित न नित्त रहै, जसु नाव चढै भव सागर तारै।।
धीरज धाम बनाई इहै तन, बुद्धि सु दीपक जिउ अजिआरै। गिआनहि की बढ़नी मनहु हाथ लै, कातरता कुतवार बुहारै।।

(सवैया कृष्णावतार २४९२)

।।वाणी भगत कबीर जी।।

गगन दमांमां बाजिया, पड्या निसांनै घाव। खेत बुहार्या सूरिवैं, मुझ मरणे का चाव।।१।।
सूरा तबही परषिये, लड़ै धणी कै हेतु। पुरिजा- पुरिजा है पड़ै, तऊ न छाड़ै खेत।।२।।
अब तौ झूझ्यां हीं बणै, मुड़ि चाल्यां घर दूरि। सिर साहिब कौं सौंपतां, सोच न कीजै सूर।।३।।
जिस मरनैं तैं जग डरै, सो मेरे आनंद। कब मरिहूं कब देखिहूं, पूरन परमानंद।।४।।
कायर बहुत पमांवहीं, बहकि न बोलै सूर। कांम पड्यां ही जांणिये, किसके मुख परि नूर।।५।।
दूरि भया तौ का भया, सिर दे नेड़ा होई। जबलग सिर सौंपै नहीं, कारिज सिधि न होइ।।६।।
कबीर यहु घर प्रेम का, खाला का घर नांहि। सीस उतारै हाथि करि, सो बैसे घर मांहि।।७।।
प्रेम न खेतौं नीपजै प्रेम न हाटि बिकाई। राजा परजा जिस रुचै, सिर दे सो ले जाइ।।८।।
भगति दुहेली रांम की, नाहिं कायर का कांम। सीस उतारै हाथि करि, सो लेसी हरि नांम।।९।।
भगति दुहेली रांम की, जैसि खांडे की धार। जै डोले तौ कटि पड़ै, नहीं तौ उतरै पार।।१०।।
भगति दुहेली रांम की, जैसि अगनि की झाल। डाकि पड़े ते ऊबरे, दाधे कौति गहार।।११।।
जेते तारे रैणि के, तेतै बैरी मुझ। धड़ सूली सिर कंगुरै, तऊ न बिसारौं तुझ।।१२।।
सिर साटे हरि सेवियै, छाड़ि जीवन का बांणि। जे सिर दीयां हरि मिलै, तबलग हांणि न जांणि।।१३।।

(स्रोत- संत सुधासार)

गुरुसिख की पहचान

राग महला ४

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए, सु भलके उठि हरिनामु धिआवे।। उदमु करे भलके परभाती, इसनानु करे अमृतसरि नावै।। उपदेसि गुरु हरि हरि जपु जापै, सभि किलविख पाप दोख लहि जावै। फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै, बहदिआ उठदिआ हरिनाम धिआवै।। जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि, सो गुरसिखु गुरु मनि भावै।। जिस नो दइआलु होवै मेरा सुआमी, तिसु गुरसिख गुरु उपदेसु सुणावै।। जनु नानकु धूड़ि मंगे तिसु गुरसिख की, जो आपि जपै अवरह नामु जपावै।।२।।

(श्री गुरुग्रन्थ साहिब पृष्ठ सं.३०५)

।।रागु सोरठि महला ९।।

जो नर दुख में दुखु नहि मानै।।
सुख सनेहु अरु भै नही जाकै कंचन माटी मानै।। नहि निंदिआ नहि उसतति जाकै लोभु मोहु अभिमाना।।
नहि निंदिआ नहि उसतति जाकै लोभु मोहि अभिमाना।। हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना।।
आसा मनसा सगल तिआगै जग तै रहै निरासा।। कामु क्रोधु जिह परसै नाहिन तिह घट ब्रह्मुनिवासा।।
गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी।। नानक लीन भईओ गोबिंद संगि जिउ पानी संगि पानी।।१०।।

राग कानड़ा महला ५

बिसरि गई सभ ताति पराई।। जब ते साध संगति मोहि पाई।।१।। रहाउ।। ना को बैरी ना ही बिगाना, सगल संगि हम कउ बनि आई।।१।। जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ, एह सुमति साधू ते पाई।।२।। सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै, पेखि पेखि नानक बिगसाई।।४।।८।।

(श्री गुरुग्रन्थ साहिब पृष्ठ सं.१२९९)

भाई गुरदास जी

वार २८

पउडी १

वालहु निकी आखीए खंडे धारहु सुणीए तिखी। आखणि आखि न सकीए लेख आलेख न जाई लिखी।
गुरमुखि पंथु वखाणीऐ अपड़ि न सकै इकतु विखी। सिल आलूणी चटणी तुलि न लख अमिअ रस इखी।
गुरमुखि सुख फलु पाइआ भाइ भगति विरली जु बिरखी। सतिगुर तुठै पाइऐ सांधसंगति गुरमति गुरसिखी।
चारि पदारथ भिखक भिखी।।१।।

। ।वाणी श्री गुरु अर्जुन देव जी की । ।

पहिला मरण कबूलि करि जीवण की छडि आस। होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पास। ।१२। ।
जिसु मनि वसै पारब्रहमु निकटि न आवै पीर। भुख तिख तिसु न विआपई जमु नहीं आवै नीर। ।१३। ।
जाको प्रेम सुआउ है चरन चिचव मन माहि। नानक बिरही ब्रह्म के आन न कतहू जाहि। ।१६। ।
मगनु भइओ प्रिअ प्रेम सिउ सूध न सिमरत अंग। प्रगटि भइओ महि नानक अधमपतंग। ।१७। ।

श्री गुरु गोविन्द सिंह जी की वाणी खालसा पंथ के बारे में

अकाल पुरख की आग्या पाई, प्रगटि भयो रूप मुनिवर को। जटा जुट नख सिख पर पावन, भगत सूर द्वै रूप नरवर कौ। । चक्रवै पद दात खुरि पायो, धर्मराज भुंचति गिरिवर को। उदय असत समुद्र परयंतं, अबिचल राज मिलयो सुरपुर को। ।४। । पंथ खालसा भ्यो पुनीता, प्रभु आगिया करि उदित भए। मिटयो द्वैत संजुगति उपाधिन, असुर मलेछन मूल गए। । धर्म पंथ खालस पचुर भयो, सति शिवं पुण्य रूप जए। कछ, केसु किपानन मुद्रित, गुरु भगता रामदास भए। ।५। ।

। ।श्री दशम् ग्रन्थ साहिब पृष्ठ ४९५-४९६। ।

ईश्वर अवतरण की अवधारणा

। ।श्री मद् भगवत गीता। ।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।

आसा दी वार (छंत)

हरि जुगु जुगु भगत उपाइआ पैज रखदा आइआ राम राजे। । हरणाखसु दुसटु हरि मारिआ पहलादु तराइआ। ।
अहंकारीआ निंदका पिठि देइ नाम देउ मुखि लाइआ। । जन नानक ऐसा हरि सेविआ अंति लए छडाइआ । । ४ । ।

राम ने हरणाकश को वध किया था ?

। ।रागु मारू महला ९। ।

हरि को नामु सदा सुखदाई। जाको सिमरि अजामिल उधरिओ गनका हू गति पाई। ।
पंचाली को राजसभा में रामनाम सुधि आई। ताको दूखु हरिओ करुनामय अपनी पैज बढ़ाई। ।
जिह नर जसु गाइओ किरपानिधि ताको भइओ सहाई। कहु नानक मैं इही भरोसै गही आन सरनाई । ।३६। ।

ब्रह्म का स्वरुप

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै। राम बिना को बोलै रे ।। १ ।। रहाउ ।। एकल माटी कुंजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे। असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु समाना रे।। १ ।। एकल चिंता राखु अनंता अउर तजहु सभ आसा रे। प्रणवै नामा भए निहकामा को ठाकरु को दासा रे ।।२।।३।।

श्री गुरुग्रन्थ साहिब पृष्ठ ९८८

।। राग कबीर जी ।।

अवल अलह नूर उपाइआ, कुदरति के सभ बंदे।। एक नूर ते सभु जगु उपजिआ, कउन भले को मंदे।।१।।
लोगा भरमि न भूलहु भाई।। खालिक खलक खलक महि खालिकु, पूरि रहिओ स्रब ठांई।।१।।रहाउ।।
माटी एक अनेक भांति करि, साजी साजनहारै।। ना कछु पोच माटी के भांडे, ना कुछ पोच कुंभारै।।२।।
सभ महि सचा एको सोई, तिसका कीआ सभु कछु होई।। हुकमु पछानै सु एको जानै, बंदा कहीए सोई।।३।।
अलहु अलखु न जाई लखिआ, गुरि गुड़ु दीना मीठा।। कहि कबीर मेरी संका नासी, सरब निरंजनु डीठा।।४।।३।।

(श्री गुरुग्रन्थ साहिब पृष्ठ सं.१३४९)

(त्व प्रसाद कवित पातशाही १०)

कोऊ भइओं मुँडीआ सँनिआसी कोऊ जोगी भइओ। कोऊ ब्रह्मचारी कोऊ जती अनुमानबो।।
हिन्दू तुरक कोऊ राफ्जी इमाम साफी। मानस की जात सबै एकै पहिचानबो।।
करता करीम सोई राजक रहीम ओई, दूसरों न भेद कोई भूल भ्रम मानबो।।
एक ही के सेब सबको गुरदेव एक, एक ही सरूप सबै एकै जोत जानबो।।१५, ८५।।
देहरा मसीत सोई पूजा ओ नवाज ओई। मानस सबै एक पै अनेक को भ्रमाओ है।
देवता अदेव जछ गंध्रव तुरक हिन्दू। निआरे निआरे देसन के भेस को प्रभाउ है।।
एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बान। खाक बाद आतश औ आब को रलाओ है।।
अलह अभेख सोई पुरान ओ कुरान ओई। एक ही सरूप सबै एक ही बनाउ है।।

दशम गुरु की वाणी

जैसे एक आग ते कनूका कोट आग उठे। निआरे निआरे हुई कै फेरि आग मैं मिलाहिंगे।।
जैसे एक धूर ते अनेक धूर पूरत है धूर के कनूका फेर धूर ही मैं समाहिगे।।
जैसे एक नद ते तरंग कोट उपजत हैं। पान के तरंग सबै पान ही कहाहिंगे।।
तैसे विश्व रूप ते अभूत भूत प्रगट होई। ताही ते उपज सबै ताहि मैं समाहिंगे।।१७,८७।।
जल कहा थन कहा गगन को गउन कहा। काल के बनए सबै काल ही चबाहिंगे।।
तेज जिउ अतेज मैं अतेज जैसे तेज लीन, ताहि ते उपज सबै ताहि में समाहिंगे।।

महिमा के शबद

।।वाणी भट्ट कलि श्री गुरुग्रन्थ साहिब।।
(सवैये महले पहिले के)

सतजुगि तै माणिओ छलिओ बलि बावन भाइओ। त्रेतै तै माणिओ रामु रघुवंसु कहाइओ। दुआपरि क्रिसन मुरारि कंसु किरतारथु कीओ। उग्रसैण कउ राजु अभै भगतह जन दीओ। कलिजुगि प्रमाणु नानक गुरु अंगद अमरु कहाइओ। स्री गुरू राजु अबिचलु अटलु आदि पुरखि फुरमाइओ।।७।। गुण गावै रविदासु भगतु जैदेव त्रिलोचन। नामा भगतु कबीर सदा गावहिसम लोचन। भगतु बेणि गुण रवै सहजि आतम रंगु माणै। जोग धिआनि गुर गिआनि बिना प्रभ अवरू न जाणै। सुखदेउ परीख्यतु गुण रवै गोतम रिखि जसु गाइओ। कवि कल सुजसु नानक गुर नित नवतनु जगि छाइओ।।८।।

।।गुरु ग्रन्थ साहिब पृष्ठ १३९०।।

राम नाम परम् धाम सुध बुध निरंकार बेसुमार सरबर कउ काहि जीउ। सुथर चित भगत हित भेखु धरिओ हरनाखसु हरिओ नख बिदारि जीउ। संख चक्र गदा आपि आपु कीओ छदम अपरंपर पारब्रहम् लखै कउनु ताहि जीउ। सति साचु सी निवासु आदि पुरखु सदा तु ही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ।।२।।७।। पीतबसन कुंद दसन प्रिआ सहित कंठ माल मुकटु सीसि मोर पेख चाहि जीउ। बे बजीर बडे धीर धमर अंग अलख अगम खलु कीआ आपणै उछाहि जीउ। अकथ कथ कथी न जाई तीनि लोक रहिआ समाई सुतह सिध रूपु धरिओ साहन कै साहि जीउ। सति साचु स्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ।।३।।८।।

।।गुरु ग्रन्थ साहिब पृष्ठ १४०२।।

ੴ सतिगुरु प्रसादि
जापु श्री मुख वाक् पातिशाही।।१०।।
छपै छंद।। त्व प्रसादि
चक्र चिह्न अरु बरन जाति, अरु पाति नहिन जिह।
रूप रंग अरु रेख भेख कोऊ कहि न सकति किह।।
अचल मूरति अनभऊ प्रकास अमितोज कहिज्जै।
कोटि इन्द्र इन्द्राणि सहि साहाण गणिज्जै।
त्रिभवन महीप सुर नर असुर नेत नेत बन त्रिण कहत।।
त्व सरबनाम कथै कवन करम नाम बरनत सुमति।।१।।
चत्र चक्र वरती चत्र चक्र भुगते। सुयंभव सुभं सरबदा सरब जुगते।।
दुकाल प्रणासी दयातं सरूपे। सदा अंग संगे अभंगं विभूते।।१९९।।

सेवक कै भरपूर जुगु जुगु वाहगुरू तेरा सभु सदका। निरंकारु प्रभू सदा सलामति कहि न सकै कोऊ तु कदका। ब्रहमा बिसनु सिरे तै अगनत तिन कउ मोहु भया मन मदका। चउरासीह लख जोनि उपाई रिजकु दीआ सभहू कउ तदका। सेवक कै भरपूर जुगो जुगु वाहगुरू तेरा सभु सदका।।१।।११।। वाहु वाहु का बडा तमासा। आपै हसै आपि ही चितवै आपे चंद्रु सुरु परगासा। आपे जलु आपे थलु थंम्हनु आपे कीआ घटि घटि बासा। आपे नरु आपे फुनि नारी आपे सारि आप ही पासा। गुरमुखि संगति सभै विचारहु वाहु वाहु का बडा तमासा।।२।।१२।।

कीआ खेलु बड मेलु तमासा वाहिगुरु तेरी सभ रचना। तू जलि थलि गगनि पयालि पूरि रह्या अंम्रित ते मीठे जा के बचना। मानहि ब्रहमादिक रुद्रादिक काल का कालू निरंजन जचना। गुरप्रसादि पाइऐ पारमारथु सत संगति सेती मनु खचना। कीआ खेलु बडमैलु तमासा वाहगुरु तेरी सभ रचना।।३।।१३।।४२।।

।।गुरु ग्रन्थ साहिब पृष्ठ ....।।

वाहिगुरु वाहिगुरु वाहिगुरु वाहि जीउ। कवल नैन मधुर बैन कोटि सैन संग सोभ कहत मा जसोद जिसहि दही भातु खाहि जीउ। देखि रूपु अति अनूपु मोह महा मग भई किंकनी सबद झनतकार खेलु पाहि जीउ। काल कलम हुकमु हाथि कहहु कउनु मेटि सकै ईसु ब्रंम्हु ग्यानु धरत हीऐ चाहि जीउ। सति साचु स्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ।।१।।६।।

वाणी श्री गुरुगोविन्द सिंह जी

विचित्र नाटक (आत्मकथा) पंचम अध्याय

तिन वेदियन के कुल बिखे प्रगटे नानक राये । सभ सिक्खन को सुख दए जह तह भए सहाई।।४।। तिन इह कल मौ धरमु चलायो। सभ साधन को राहु बतायो। जे ता के मारगि महि आए। ते कबहूं नहीं पाप संताए।।५।। जे जे पंथ तवन के परे। पाप ताप तिन के प्रभ हरे। दूख भूख कबहूं न संताए। जाल काल के बीच न आए ।।६।।

नानक अंगद को बपु धरा। धरम प्रचुरि इह जग मो करा। अमरदास पुनि नामु कहायो। जन दीपक ते दीप जगायो।।७।। जब बर दानि समै बहु आवा। रामदास तब गुरु कहावा। तिहबर दानि पुरातनि दीआ। अमरदासि सुरपुरि मगु लीआ।।८।। श्री नानक अंगदि करि गाना। अमरदास अंगद पहिचाना। अमरदास रामदास कहायो। साध नि लखा मूढ़ नहि पायो।।९।। भिंन भिंन सभहूं करि जाना। एक रूप किनहूं पहिचाना। जिन जाना तिन ही सिध ा पाई। बिन समझे सिध हाथ न आई।।१०।। रामदास हरि सों मिल गए। गुरता देते अरजनहि भए। जब अरजन प्रभ लोक सिधाए। हरिगोबिंद तिह ठॉ बैठाए।।११।। हरिगोबिंद प्रभ लोक सिधारे। हरीराइ तिह ठॉ बैठारे। हरीक्रिशन तिन के सुत वए। तिन ते तेगबहादर भए।।१२।। तिलक जंजू राखा प्रभ ताका। कीनो बड़ो कलू महि साका। साध नि हेति इती जिनि करी। सीसु दीआ परु सी न उचरी।।१३।। धरम हेत साका जिनि कीआ। सीसु दीआ परु सिर रन दीआ। नाटक चेटक कीए कुकाजा। प्रभ लोगन कह आवत लाजा।।१४।। ठीकरि फोरि दिलीस सिरि प्रभ पुर कीआ पयान। तेगबहादर सी क्रिआ करी न किनहूं आन।।१५।। तेगबहादर के चलत भयों जगत को सोक। है है है सभ जग भयो जै जै जै सुरलोक ।।१६।।

षष्टम अध्याय

ठाढ भयो मैं जोरि करि बचन कहा सिर न्याइ। पथ चलै तब जगत मैं जब तुम करहु सहाइ।।३०।।
इह कारनि प्रभ मोहि पठायो। तब मैं जगत जनमु धरि आयो। जिम तिन कही इनै तिम कहिहौं। अउर किसू ते बैर न गहिहौं।।३१।। जै हम को परमेशर उचरिहै। ते सभी नरकि कुंड महि परिहै। मों को दासु तवन का जानो। या मैं भेदु न रंच पछानो।।३२।। मै हो परम पुरख का दासा। देखनि आयो जगत तमासा। जो प्रभ जगति कहा सो कहिहौं। म्रित लोग ते मोनि न रहिहौ।।३३।। हम इह काज जगत मो आए। धरम हेतु गुरदेव पठाए। जहां तहां तुम धरम बिथारो। दुसट दोखियनि पकरि पछारो।।४२।। याही काज धरा हम जनमं। समझ लेहु साधू सभ मनम। धरम चलावन संत उबारन दुशट सभन को मूल उपारन।।४३।।

महिमा गुरु साहिबान

।।राग गउड़ी महला ९।।

साधो, मन का मान तिआगो। काम क्रोध दुरजन की, संगत ताते अहनिसि भागो।।
सुखु दुखु दोनों सम करि जानै, औरु मानु अपमाना। हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना।
उसतुति निंदा दोऊ त्यागै, खोजै पदु निरबाना। जन नानक इहु खलु कठन है, किनहु गुरमुखि जाना।।२०।।

सूही महला ५

संता के कारजि आपि खलोइआ, हरि कंमु करावणि आइआ राम।। धरिति सुहावी तालु सुहावा, विचि अंमृत जलु छाइआ राम।। अंमृत जलु छाइआ पूरन साजु कराइआ, सगल मनोरथ पूरे।। जै जै कारु भइआ जग अंतरि, लाथे सगल विसूरे। पूरन पुरख अचुत अबिनासी, जसु वेद पुराणी गाइआ।। अपना बिरदु रखिआ परमेसरि, नानक नामु धिआइआ।।१।।

(श्री गुरुग्रन्थ साहिब पृष्ठ सं.७८३)

बाबर आक्रमण के समय गुरुनानक साहब द्वारा उचारी गयी वाणी

।। रागि आसा महला १ ।।

खुरासान खसमाना कीआ हिंदुस्तानु डराइया । आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चढाइआ। ऐती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ ।। १ ।। करता तूं सभना का सोई। जे सकता सकते कउ मारे ता मनि रोसु न होई ।। १ ।। रहाउ ।। सकता साहु मारे पै वगै खसमै सा पुरसाई। रतन विगाडि विगोए कुतीं मुइआ सार न काई। आपे जोड़ि विछोड़े आपे वेखु तेरी वडिआई।। २ ।। जे को नाउ धराए वडा साद करे मनि भाणे। खसमै नदरी कीड़ा आवै जेते चुगै दाणे। मरि मरि जीवै ता किछु पाए नानक नामु बखाणे ।। ३ ।। ५।। ३९।।

{जिन दिनों मक्के की तीसरी 'उदासी' से गुरु नानकदेव बगदाद एवं काबुल के रास्ते से सन् १५२१ में हिन्दुस्तान वापिस आ रहे थे उन्हीं दिनों बाबर ने सैदपुर (एमनाबाद) पर आक्रमण कर दिया। सतिगुरु गुरु नानकदेव से रहा न गया और एमनाबाद पहुँचें और वहां मुगलों के अत्याचारों से पीड़ित जनता के दुख से दुखी होकर उन्होंने जो कुछ उच्चरित किया वह इस शब्द में है।}

।।राग तिलंग महला १।।

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो। पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ जोरी मंगै दानु वे लालो। सरमु धरमु दुई छपि खलोए कूडु फिरै परिधानु वे लालो। काजीआ बामणा की गलथकी, अगदु पड़ै सैतानु वे लालो। मुसलमानीआ पढहि कतेबा कसट महि करहि खुदाइ वे लालो। जाति सनाती होरि हिदवाणीआं एहि भी लेखै लाई वे लालो। खून के सोहिले गावीअहि नानक रतु का कुंगू पाई वे लालो।।१।। साहिब के गुण नानकु गावै मास पुरी विचि आखु मसोला। जिनि उपाई रंगि रवाई बैठा वेखै वखि इकेला। सचा सो साहिबु सचु तपावसु सचड़ा निआउ करेगु मसोला। काइआ कपडु टुकु टुकु होसी हिदुसतानु समालसी बोला। आवनि अठतरै जानि सतानवै होरु भी उठसी मरद का चेला। सच की वाणी नानकु आखै सचु सुणाइसी सच की बेला।।२।।३।।४।।५।।

राग वार रामकली भाई गुरदास जी

हरि सच्चे तखत रचाइआ संति संगति मेला।। नानक निरभउ निरंकार विचि सिधां खेला।।
गुरु सिमर मनाई कालका खंडे की वेला।। पीवहु पाहुल खडेधार हुई जनम सुहेला।।
गुर संगनि कीनी खालसा मनमुखी दुहेला।। वाह वाह गोबिन्द सिंध आपे गुरु चेला।।१।।

(श्री गुरुग्रन्थ साहिब पृष्ठ सं.४१-१)

कबीर -नरश्री पीपा-नानक -वृंतान्त

प्रत्यूषश्चैव पांचाले वैश्याजात्यां समुद्भवः। मार्ग पालनस्व तनयो नानको नाम विश्रुत।।८६।।
रामानन्द समागम्य शिष्यों भूत्वा स नानका। स वै म्लेच्छान्वशीकृत्य सूक्ष्ममार्ग यदर्शयत्।।८७।।

(भविष्यत् पुराण)

।।अरदास।।

।। ੴ श्री वाहिगुरू जी की फतहि।।

श्री भगौती जी सहाई।। वार श्री भगौती जी की पातशाही १०।। प्रथम भगौती सिमरि कै गुर नानक लई धिआई।। फिर अंगद गुर ते अमरदासु रामं दासै होईं सहाई।। अरजन हरगोबिंद नो सिमरों श्री हरिराइ।। श्री हरि कृशन धिआईऐ जिस डिठे सभि दुखि जाई।। तेग बहादर सिमरीऐ घरनउ निधिआवै धाइ।। सभ थाई होईं सहाई।। दसवां पातशाह श्री गुरू गोबिंद सिंह महाराज जी! सब थांई होइसहाई।। दसों सत्गुरूओं के ज्योतिस्वरूप श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के पाठ व दर्शन का ध्यान धरकर बोलोजी वाहिगुरू! पांच प्यारें, चार गुरू कुमारों, चालीस मुक्तों, हठी तपी तपियों जिन्होंने नाम जपा, बांट खाया, देग चलाई, तेग चलाई, देख कर अडीठ किया, उन प्रेमी सत्य वादियों की पवित्र कमाई का ध्यान धर कर खालसा जी ! बोलो जी वाहिगुरु।

जिन सिंह सिंहनियों ने धरम पर बलिदान दिये अंग अंग कटवाए, सिर की खोपरीयों उतरवाई, चर्खियों पर चड़ाए गये, कर्वत्त से तन चिरवाए, गुरद्वारों के सुधार और पवित्रता के निमित्त शहीद हुए, धरम नहीं छोड़ा सिख धरम का केशों तथा प्राणों सहित पालिन किया, उनकी कृत्य कमाई का ध्यान धर कर खालसा जी! बोलो जी वाहिगुरू!

चारों तखतों, समूह गुरदवारों का ध्यान धर कर बोलो जी वाहिगुरु!

प्रथमें सर्व खालसा जी की अरदास है जी सर्व खालसा जी को वाहिगुरु वाहिगुरु, वाहिगुरु चित आवे, चित में आने से सर्व सुख हो जहां जहां खालसाजी साहिब, तहां तहां रक्षा रियात, देग तेग फतह, बिरद की लाज पन्थ की जीत, श्री साहिब जी सहाय, खालसा जी का बोल बाला हो, बोलो जी वाहिगुरु !!!

सिखों को सिखी दान केश दान, रहित दान विवेक दान, विश्वास दान, भरोसा दान, दानों के सिर दान, नाम दान, श्री अमृतसर जी के स्नान, चौकियों झंडे, बुंगे जुगो जुगो अटल धर्म का जयकार, बोलो जी वाहिगुरु!!!

सिखोंका मन नम्र, मति ऊची मति का रक्षक स्वयं वाहिगुरू। है नि:मानो के सम्मान, नि:त्राणों के त्राण नि:ओओ की ओट, निरासरयों के आसरे, सच्चे पिता वाहिगुरु आपकी सेवा में.....*.......की प्रार्थना है। अक्षर लग मात्र भूल चूक माफ करना सर्व के कार्य सिद्ध हो उन प्रेमियों का मिलाप हो जिनके मिलने से चित में तेरे नाम का निवास हो। नानक नाम चढदी कला।। तेरे भाणे सर्बत का भला।।

* यहां जिस निमित्त अरदास है उसका आख्यान करें।

हिन्दी अनुवाद - जवाहर सिंह कृपाल सिंह एण्ड को. - अमृतसर द्वारा प्रकाशित नितनेम हिन्दी से साभार

अपने कार्यकर्ताओं में से रागी जत्थे तैयार हो। भेटा देकर रागी जत्थे बुलाना उचित नहीं। सेवा भाव से जत्थे आवें।

5. पाठ / कीर्तन के बाद –

तिलग महला पहला

"जैसी मैं आवै – खसम की बाणी ....सच सुणायसी सच की बेला" पाठ करना है। इसके साथ साथ "देहि शिवा वर" शब्द का पाठ एकात्मक मंत्र यम वैदिका .... तथा मूल मंत्र के भाव के अनुरूप भाव रखने वाली प्राचीन वाणी का पाठ किया जा सकता है।

6. 20 मिनट तक, सुयोग्य वक्ता द्वारा, पहले तय किये गये विषय के अनुसार गुरुघर का इतिहास, इतिहास के प्रेरक प्रसंग, गुरुवाणी व्याख्या, प्राचीन संस्कृति के प्रसंग जिनका गुरुवाणी में संदर्भ आता हो, अथवा एकात्मता निर्माण करने में सहायक विषयों पर प्रवचन हो। वक्ता समाज के कोई विद्वान हो सकते है, भले वे हमारे सदस्य न हो, पर उनका दृष्टिकोण सकारात्मक व जोड़ने वाला है।

7. 10 मिनट तक संगठनात्मक तथा भावी समय में मनाये जाने वाले गुरुपर्व, सेवा कार्यो, कार्यक्रम आदि की जानकारी/सूचना दी जावे। संगठनात्मक या अन्य चर्चाओं हेतु अरदास के बाद रोका जा सकता है। कार्यक्रम की समाप्ति अरदास से हो।

8. जहां गुरूग्रन्थ साहिब की हुजूरी में कार्यक्रम हो तो मर्यादाओं का पूर्ण ध्यान रखा जावे। यदि कार्यक्रम गुरुग्रन्थ साहिब की हुजूरी में न हो तो अरदास से पूर्व बन्देमातरम् का गान हो।

9. यदि कार्यक्रम गुरुग्रन्थ साहिब की हुजुरी में न हो तो गुरुनानक देव जी, गुरू गोविन्द सिंह जी, गुरु तेग बहादुरजी, भगवान श्रीराम का चित्र रखा जावे तथा पुष्प आदि पहले से लगवाकर रखे। अलग स्थान पर दीप प्रज्वलन कार्यक्रम हो। चित्र वातावरण को संस्कारात्मक बनाने के लिए लगाने हैं उनसे मूर्ति पूजा का भाव प्रकट न हो, इसलिए चित्र पर माल्यार्पण या उसके आगे दीप प्रज्वलन कार्यक्रम न हो।

10. मासिक सत्संग पूरी तैयारी से किया जावे जिसमें सदस्यों को परिवार सहित आने का निमंत्रण दिया जावे। मासिक सत्संग का स्वरूप धार्मिक, उत्साहजनक व प्रेरणा भरने वाला हो। मासिक बैठक, प्रबन्धकीय, वैचारिक, शैक्षणिक तथा आत्मिक चिन्तन वाली रहे, ऐसा प्रयास रहे। मासिक मिलन में बच्चों व माताओं बहिनों का पूरा जुड़ाव हो ऐसे विषय तय हो। गौरवमयी बलिदान गाथायें, ज्ञानात्मक बोधकथायें, गुरू साहिबान व भक्तों की जीवन कथाये आदि विषय रहने से सर्वगमय रहेंगे।

सक्रिय ईकाई का मापदण्ड

(अ) जो नियमित मासिक बैठक करती हो।

(ब) जो नियमित मासिक सत्संग करती हो।

(स) जो कम से कम अपना एक सेवा प्रकल्प चलाती हो या किसी अन्य चल रहे सेवा प्रकल्प में सामुहिक रूप से भाग लेती हो।

(द) जो वर्ष में कम से कम एक गुरुपर्व मनाती हो।

(ई) जो वर्ष में न्यूनतम एक सार्वजनिक कार्यक्रम करती हो।

(फ) जो वर्ष में एक बार कार्यकर्ताओं का अभ्यास वर्ग आयोजित करती हो।

ईकाई खोलने की प्रक्रिया

(1) कोई भी व्यक्ति जो श्री गुरुनानक देव जी से लेकर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी को गुरू परम्परा, इस देश के श्रेष्ट सन्तों महापुरूषों तथा भारत की एकता व अखण्डता में आस्था रखता हो। राष्ट्रीय सिख संगत का सदस्य बन सकता है।

(2) ऐसे 5 या अधिक व्यक्ति जो उक्त विचार के हो और अपने यहां संगत की स्थाई व नियमित गतिविधियां। कार्यक्रम चलाना चलाना चाहते हों, इस हेतु आवेदन कर सके हैं। प्रदेश कार्यालय या कोई प्रदेश अधिकारी स्वयं भी किसी स्थानीय समिति के गठन के लिए उक्त विचारों वाले व्यक्तियों से सम्पर्क कर सकता है।

(3) ऐसा आवेदन जो पांच या उससे अधिक व्यक्तियों के हस्ताक्षर युक्त हो तथा उसके साथ पंजीयन शुल्क 101/– तथा सम्बद्धता शुल्क 125/– का डिमाण्ड ड्राफ्ट अथवा नगद राशि यदि प्रान्तीय समिति के माध्यम से आवेदन किया है। हो तो शिरोमणि समिति ऐसी समिति को पंजीकृत कर सकती है। आवेदन पर हस्ताक्षर कर्ताओं का पूरा पता मय दूरभाष क्रमांक कार्यकारिणी आदि के अंकित हो। आवेदन के साथ प्रस्तावित तदर्थ समिति की सूची मय पतों के संलग्न की जावे। जिसे प्रान्तीय समिति के माध्यम से घोषित कराया जावेगा।

(4) पंजीकृत ईकाई को नियम 10 (ग) के अनुसार पंजीयन अनुक्रमांक एवं पंजीयन प्रमाण पत्र जारी किया जावेगा।

(5) इस प्रकार पंजीकृत ईकाई को प्रत्येक वर्ष 125/: रूपये वार्षिक सम्बद्धता शुल्क वर्ष के प्रारम्भ में अदा करना होगा।

(6) सदस्यता शुल्क 25/– वाषिक है। संगठन चलाने के लिये विशेष सहायता अलग से ली जा सकती है लेकिन विशेष सहायता अनिवार्य न रखी जावे ताकि आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति भी समिति के सदस्य बन सकें।

स्थानीय समिति की गतिविधियां

1 स्थानीय समिति संलग्न सूचना बाबत सक्रिय ईकाई के मापदण्ड एवं मासिक सत्संग की बैठक की विधि के अनुसार अपनी गतिविधियों का संचालन करेगी।
2. विभिन्न पर्वो का आयोजन समस्त समाज को साथ लेकर करना।
3. गुरमति, इतिहास, संस्कृति, आध्यात्म एवं राष्ट्रीय विषयों पर संगोष्ठियों व कार्यक्रम आयोजित करना।
4. 'संगत' के उद्देश्यों के अनुसार संविधान की धारा 4 के अनुसार विभिन्न गतिविधियां चलाना।
5. उक्त गतिविधियों के संचालन हेतु वर्ष में एक बार सर्व साधारण समाज में धन संग्रह किया जावेगा जिसका समापन किसी केन्द्रीय पदाधिकारी को थैली भेंट के रूप से होगा। संग्रहित राशि में

स्थानीय समिति का अंश 40% तथा प्रदेश ईकाई का 20% अंश रहेगा।

6. स्थानीय समिति अपने युवक दल व महिला दल गठित कर सकती है। खेल कूद प्रतियोगिता, सामुहिक पाठ (सुखमनी साहिब आदि), सेवा कार्यक्रम, कीर्तन कार्यक्रम आदि भी लिये जा सकते हैं।

राष्ट्रीय सिख संगत

—: सदस्यता आवेदन पत्र :—

मैं (कृपया पूर्ण नाम लिखिये) ——————————————————————

"राष्ट्रीय सिख संगत" के उद्देश्यों और कार्यपद्धति से सहमत हूँ। मैं "राष्ट्रीय सिख संगत" का सदस्य बनना चाहता हूँ। मैं संगत का न्यूनमत वार्षिक शुल्क प्रति वर्ष देता रहूँगा।

मैं संकल्प करना हूँ कि –

" मैं श्रीगुरू नानक देवजी से लेकर श्रीगुरू ग्रंथसाहिबजी तक की गुरुपरंपरा तथा इस देश के श्रेष्ठ संतों एवं महापुरुषों का समादर करूँगा। मैं सदा हिन्दुस्तान की सनातन संस्कृति व सभ्यता के विकास, देश की एकता एवं अखंडता की रक्षा तथा उसकी समृद्धि एवं उन्नति के लिए प्रमाणिकता से प्रयास करता रहूंगा। मैं निः स्वार्थ बुद्धि से गुरूवाणी के मार्ग पर चलता हुआ "राष्ट्रीय सिख संगत" में पूर्ण समर्पण भाव एवं तत्परता से कार्यरत रहूँगा।

श्री वाहेगुरुजी का खालसा ! श्री वाहेगुरुजी की फते ! "

पता : ——————————

जन्म तिथि : ——————————

दूरभाष : ——————————

हस्ताक्षर : ——————————

श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में प्रयुक्त प्रभु के नाम और उनकी आवृति संख्या इस प्रकार है।

नाम	संख्या	नाम	संख्या
१. हरि	८३४४	२०. मुकन्द	२८
२. राम	२५३३	२१. माधव	२७
३. प्रभु	१३७१	२२. परमानन्द	२२
४. गोपाल	४३१	२३. कृष्ण	२१
५. गोबिन्द	४७५	२४. सारंगपाणि	२०
६. पार ब्रह्म	३२४	२५. विठ्ठल	१६
७. ठाकुर	२८३	२६. वाहिगुरु	१५
८. कर्त्ता	२२८	२७. बनवासी	१५
९. दाता	१५१	२८. नरसिंह	१५
१०. परमेश्वर	१३९	२९. दामोदर	९
११. मुरारी	९७	३०. मधुसूदन	७
१२. नारायण	८५	३१. रघुनाथ	३
१३. अन्तर्यामी	३१	३२. बारन	३
१४. जगदीश	६०	३३. सारंगधर	३
१५. सतनाम	५९	३४. अच्युत	३
१६. मोहन	५४	३५. रघुराई	२
१७. अल्लाह	४६	३६. गोपीनाथ	२
१८. भगवान	३०	३७. गोवर्धनधारी	२

इन शब्दों के अतिरिक्त वाणीकारों ने गोसाई, कमलाकान्त, लक्ष्मीधर, चक्रधर, चतुर्भज, मच्छ, कूर्म, बराह, गोरख, रूद्र, खुदा, खालिक, कादिर, करीम, सर्वपतिपालक, रहीम, अलख, अपार, बेशुमार, भगवंत, भव-भजन, ऋषिकेश, वासुदेव, लीलाधर आदि नामों का भी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में स्थान स्थान पर उल्लेख किया है।

सक्रिय इकाई

सक्रिय ईकाई से निम्न अपेक्षायें हैं –

(क) जिसकी नियमित मासिक बैठक विधिवत् परम्परा से होती हो।

(ख) जिसके कार्यकर्ता परिवार सहित नियमित मिलते हो व नियमित मासिक गुरुमत सत्संग करते हो।

(ग) न्यूनतम् एक सेवा कार्य अपनी योजना से खड़ा किया हो या किसी चल रहे सेवा प्रकल्प में नियमित भागीदारी करते हो।

(घ) वर्ष में न्यूनतम् एक बार भव्य प्रकट कार्यक्रम कर उसमें समाज के प्रमुख प्रभावी व्यक्तियों को जोड़ते हो तथा उन्हें संगठन के निकट लाने में प्रयासरत हों।

(च) न्यूनतम् कम से कम एक गुरु पर्व मनाती हो।

(छ) न्यूनतम् किसी महापुरुष, गुरुग्रन्थ साहब में आये भक्तों के जन्मदिन आदि पिछड़ी बस्तियों में मनाती हों।

(ज) कार्यकर्ताओं का प्रत्येक वर्ष स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षण वर्ग / अभ्यास वर्ग आयोजित करती हों।

(झ) महिला सत्संग / सामुहिक पाठ / सामुहिक कीर्तन हेतु अपनी एक महिला टोली खड़ी हो।

(ट) युवाओं हेतु शारीरिक प्रशिक्षण वर्ग / कार्यक्रम आयोजित होते हो तथा इस हेतु अपने युवा कार्यकर्ताओं की टोली खड़ी हो।

(ठ) युवाओं व बालों के संस्कारों व ज्ञान वृद्धि हेतु वर्ष में एक बार गुरुमत बाल विकास / गुरुमत ज्ञान विकास कैम्प आयोजित करती हो।

(ड) विद्यालय / महाविद्यालयों में विभिन्न पर्वो पर भाषण / लेख प्रतियोगिताओं का आयोजन करती हो।

स्थानीय समितियों द्वारा आयोजित मासिक बैठक या मासिक मिलन सामान्य सूचना एंव आवश्यक करणीय विन्दु।

संगत के संविधान के अनुच्छेद 12 ख के अनुसार प्रत्येक स्थानीय समिति मासिक बैठक एवं मासिक सत्संग आयोजित करती है। यह मासिक संगत व्यवस्थित, परिणामकारी व प्रभावी हो, इसके लिए – महत्वपूर्ण बिन्दुओं की जानकारी दी जा रही है।

1. संविधान के अनुसार सदस्य बनाकर अन्य औपचारिकतायें पूर्ण कर मासिक बैठक व सत्संग की व्यवस्था की जावे।
2. मासिक सत्संग व्यवस्थित हो, प्रेरणा व स्फूर्ति का केन्द्र बने यह दायित्व पूर्णतया स्थानीय समिति का है।
3. मासिक सत्संग की व्यवस्था के लिये एक कार्यकर्ता अलग से नियुक्त कर सकते हैं जो विद्वानों, स्कोलरों को सम्पर्क में लाये, उनके कार्यक्रम तय करे तथा विचार चर्चा हेतु विषयों पर विचार करें।
4. सबसे पहले सिर ढक कर तथा जूते आदि खोलकर " V सति नाम..........से नानक होसी भी सच " तक का 5 बार पाठ हो। उसके बाद यदि व्यवस्था हो सके तो किसी रागी जत्थे के द्वारा या कार्यकताओं द्वारा 20 मिनट तक शब्द कीर्तन किया जावे या सुखमनी साहब अथवा रामावतार, कृष्णावतार, अकाल उस्तति में से पाठ हो। रागी जत्थे संगत के सदस्य हो ऐसा प्रयास हो तथा यह भी प्रयास हो कि

संक्षिप्त जीवन ब्यौरा गुरु साहिबान

पवित्र नाम गुरु साहिबान	नाम पिता जी/माता जी	प्रकाश स्थान	प्रकाश तिथि सन्	ज्योति ज्योत
श्री गुरु नानक देव जी	महला कालू जी (कल्याण दास जी) त्रिप्ता जी (पाकिस्तान)	तलवंडी राय भोय ननकाना साहिब	१५-४-१४६९	२२-९-१५३९
श्री गुरु अंगद देव जी	फेरु मल जी सभराई जी	मत्ते नांगे दी सरां जिला फिरोजपुर	३१-३-१५०४	१-४-१५६२
श्री गुरु अमरदास जी	तेज भान जी सुलक्खनी जी	बासरके जिला श्री अमृतसर	५-५-१४७९	१-९-१५७४
श्री गुरु रामदास जी	हरिदास जी दया जी (पाकिस्तान)	चूना मण्डी लाहौर	२४-९-१५३४	२-९-१५८१
श्री गुरु अर्जुन देव जी	श्री गुरु रामदास जी भानी जी जिला अमृतसर	श्री गोविन्दवाल साहिब	१५-४-१५६३	३०-५-१६०६
श्री गुरु हरिगोबिन्द सिंह जी	श्री गुरु अर्जुन देव जी गंगा जी जिला अमृतसर	गुरु की बडाली	१४-६-१५९५	३-३-१६४४
श्री गुरु हर राय साहिब जी	बाबा गुरु दित्ता जी निहाल जीजिला रोपड़	कीरतपुर	३०-१-१६३०	६-१०-१६६१
श्री गुरु हरिकृष्ण साहिब जी	श्री गुरु हरि राय जी राज जी जिला रोपड़	कीरतपुर साहिब	७-७-१६५६	३०-३-१६६४
श्री गुरु तेगबहादुर जी	श्री गुरु हरि गोविन्द साहिब जी नानकी जी	श्री अमृतसर	१-४-१६२१	११-११-१६७५
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	श्री गुरु तेगबहादुर जी गुजरी जी (बिहार)	श्री पटना साहिब	२२-१२-१६६६	७-१०-१७०८

प्रगट गुरा की देह प्रथम प्रकाश श्री हरिमंदिर साहिब, गुरु गद्दी नान्देड (हजूरसाहब)१६-८-१६०४ युगो युग अटल श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज अमृतसर

- पांच प्यारे :- जिन्हे दसम पिता ने बैसाखी सन् १६९९ को श्री आनन्दपुर साहिब में अमृत छका कर सिंह सजाया :-
  १. भाई दया सिंह (लाहौर) २. भाई धर्म सिंह जी (दिल्ली) ३. भाई हिम्मत सिंह जी (जगन्नाथपुरी)
  ४. भाई मोहकम सिंह जी (द्वारकापुरी) ५. भाई साहिब सिंह जी (बीदर)।
- पांच वाणियों :- (नित्तनेम) १. जपु जी साहिब २. पापु साहिब ३. सवैये पातशाही १० (सृवग सुध) ४. सोदर रहिरास
  ५. श्री सोहिला साहिब।
- पांच तख्त साहिबान :- १. अकाल तख्त साहिब अमृतसर (पंजाब) २. श्री पटना साहिब (बिहार)
  ३. श्री केसगढ साहिब आनंदपुर (पंजाब) ४. श्री हजुर साहिब नादिड़ (महाराष्ट्र)
  ५. श्री दमदमा साहिब साबो की तलवन्डी भठिन्डा (पंजाब)
- पांच ककार :- केश, कंघा, कृपाण, कड़ा और कछहरा।
- चार साहिबजादे:- दसम् पिता श्री गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज के चार पुत्र जिन्होने धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहूति दी १. साहिबजादा अजीतसिंह जी, २. साहिबजादा झुंझारसिंह जी ३. साहिबजादा जोरावरसिंह जी ४. साहिबजादा फतेहसिंह जी।

शिरोमणि समिति

क्रसं	पद	नाम	पता
1..	अध्यक्ष	स. चिरंजीव सिंह	57, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली – 55
2.	उपाध्यक्ष	स. बृजभूषण सिंह वेदी	सिविल लाइन, कादिया जिला गुरदासपुर – 143505
3.	उपाध्यक्ष	स. बलिहार सिंह	स्टेशन के पास चाम्पा (म.प्र.)
4.	उपाध्यक्ष	डॉ. के. पी. अग्रवाल	1/5 गोखले मार्ग लखनऊ – 226003
5.	उपाध्यक्ष	स. बलवन्त सिंह	मकान 14–11–799, शाह इनायत गंज हैदराबाद – 505468
6.	उपाध्यक्ष	डॉ सुरजीत कौर जौली	7/3 भगवानदास रोड नई दिल्ली – 110001
9.	महामंत्री	स. गुरचरन सिंह गिल	आनन्दधाम, बीनारायण गेट, भरतपुर – 321001
10.	संगठन मंत्री	स. गुरमुख सिंह	15, अशोका गार्डन भोपाल – 426023
11.	सहसंगठन मंत्री	स. गजेन्द्र सिंह एडवोकेट	जगतपुरा, रूद्रपुर जिला उधमसिंह नगर
12.	कोष प्रमुख	स. कंवरजीत सिंह	44 सी, सिंगार नगर, लखनऊ – 226003
13.	वित्त सलाहकार	श्री मेघराज जुल्का	5/295 राजापार्क जयपुर – 302004
14.	सदस्य	श्री विश्वनाथ जी	1017, सेक्टर 18 सी चंडीगढ
15.	सदस्य	स. विरेन्द्र सिंह जौहर	181, जोरबाग, नई दिल्ली – 110001
16.	सदस्य	स. पृथ्वीपाल सिंह आनन्द	165, शिवाजी नगर, धर्मपेठ एक्सटेन्शन नागपुर –440002
17.	सदस्य	डॉ. जसविन्दर सिंह	चांपा नगर, ब्यावर जिला अजमेर
18.	सदस्य	स. जसवन्त सिंह पन्नू	198, अम्बिका बिहार, पश्चिम बिहार, नई दिल्ली–87